अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश और
हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय

# राष्ट्रीय संगोष्ठी

# छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में श्रीराम

**13-14 मार्च, 2023**

**संरक्षक**

**प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल**

माननीय कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

**सह-संरक्षक**

**प्रो. मनीष श्रीवास्तव**

कुलसचिव (कार्यवाहक), गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

**संगोष्ठी संयोजक**

**डॉ. गौरी त्रिपाठी**

एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

**आयोजन समिति**

डॉ. रमेश कुमार गोहे
डॉ. राजेश मिश्रा
डॉ. लोकेश कुमार
डॉ. अतुल कुमार
श्री मुरली मनोहर सिंह
डॉ. अखिलेश गुप्ता
डॉ. अनीश कुमार

:::: आयोजक ::::

**हिंदी विभाग**

## गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

कोनी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

# राष्ट्रीय संगोष्ठी (13-14 मार्च, 2023)

# छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति में श्रीराम

**मान्यवर,**

छत्तीसगढ़ की शस्य श्यामला भूमि, श्रीराम को भांजे के रूप में पूजती है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्परा में प्रभु श्री राम रचे-बसे हैं। माता कौशल्या के धाम से लेकर भगवान राम वनवासकाल में जहां-जहां से गुजरे, उन सभी जगहों को पर्यटनपथ के तौर विकसित किया जा रहा है। राम को भांजा मानने की परंपरा देशभर में और कहीं देखने को नहीं मिलती। छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश जहां श्रीराम भगवान भी हैं और लोक-परंपरा में भांजा भी। छत्तीसगढ़ में यह परंपरा वाचिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी लोक गायन में रामायण मंडली में हस्तांतरित होती रही है। ऐसे भी प्रमाण मिले हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि अयोध्या के राजा श्रीराम की माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की ही थीं। 'छत्तीसगढ़ की संस्कृति' के अंतर्गत अंचल के प्रसिद्ध उत्सव, नृत्य, संगीत, मेला-मड़ई तथा लोक शिल्प आदि शामिल हैं। छत्तीसगढ़ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का विकास और उसका रचनात्मक मूल्यांकन तथा छत्तीसगढ़ी लोक और संस्कृति में स्थापन की दृष्टि से राम के वृहत जीवन उद्देश्यों की भावभूमि पर व्यापकता से विचार करना इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का केंद्रीय बिन्दु है।

## संगोष्ठी के उप-विषय (मुख्य विषय से संबन्धित अन्य उपविषय भी बनाए जा सकते हैं।)

1. **लोक-जीवन में प्रचलित रामकाव्य**
2. **रामकाव्य का अखिल भारतीय स्वरूप**
3. **राम की लीलाभूमि छतीसगढ़ में राम का स्वरूप**
4. **लोक संस्कृति में राम और स्त्री विषयक चितन**
5. **लोक-गीतों में राम**
6. **ऐतिहासिक संदर्भों में राम**
7. **भक्तिकाव्य का लोक-पक्ष**
8. **हिन्दी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों में राम**
9. **छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्परा में राम**
10. **दंत-कथा और लोकोक्तियों में राम**
11. **छत्तीसगढ़ी साहित्य में राम**
11. **दंडकारण्य में राम**
12. **भारतीय दर्शन में राम**
13. **भक्तिकाव्य का स्त्री पक्ष**

## शोध-पत्र संबंधी निर्देश

शोध-पत्र हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किए जाएंगे। चयनित शोध-पत्रों की पूर्व समीक्षा के पश्चात अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या द्वारा पुस्तक का प्रकाशन भी किया जाएगा। शोध-पत्र की शब्द सीमा 2000 से 3000 तक होनी चाहिए। शोध-सारांश 200 शब्द तक होने चाहिए। शोध-पत्र यूनिकोड फॉन्ट (कोकिला, मंगल, एरियल एमएस यूनिकोड) में ही भेजें। शोध-पत्र में **'शोध-सारांश, बीज शब्द, प्रस्तावना, मुख्य विषय का विश्लेषण, प्राप्त आंकड़े, निष्कर्ष, संदर्भ-सूची'** अवश्य होने चाहिए। शोध-पत्र वर्ड और पीडीएफ़ फ़ाइल में ई-मेल hodhindiggv@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

**शोध-सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 25 फरवरी 2023**
**पूर्ण शोध-पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 28 फरवरी 2023**

## पंजीकरण

ऑनलाइन गूगल फॉर्म के माध्यम से पंजीकरण किया जा सकता है। संयुक्त शोध-पत्र में दो अलग-अलग पंजीयन शुल्क देना होगा। पंजीयन शुल्क विश्वविद्यालय के खाते में ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। **पेमेंट के पश्चात रसीद की कॉपी गूगल फॉर्म के साथ अवश्य संलग्न करें।**

**पंजीयन लिक : https://forms.gle/hgSB4qQvuxSP7N3a6**

**पंजीयन शुल्क –**

प्राध्यापकों के लिए : 800 रुपये
शोधार्थियों के लिए : 500 रुपये
विद्यार्थियों के लिए : 200 रुपये

**खाते का विवरण**

खाताधारक : **REG GURU GHASIDAS UNI BILASPUR**
खाता संख्या : **37137162271** IFSC : **SBIN0018879**
बैंक का नाम : **SBI** शाखा का नाम : **LODHIPARA KONI**

## विश्वविद्यालय का परिचय

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर के छत्तीसगढ़ राज्य में केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009, क्रमांक 25 के तहत स्थापित है। औपचारिक रूप से गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, राज्य विधानसभा के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था और 16 जून, 1983 को उद्घाटन हुआ था। सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित इस विश्वविद्यालय का नामकरण छत्तीसगढ़ के महान संत गुरु घासीदास (जन्म 17 वीं सदी में) के सम्मान स्वरूप दिया गया। जिन्होने वंचित समुदायों, सभी सामाजिक बुराइयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष छेड़ा।

## विभाग का परिचय

हिन्दी विभाग की स्थापना वर्ष 1987 में की गयी। अपने आरम्भ से ही विभाग में अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ हिन्दी के विकास तथा प्रसार हेतु काव्यगोष्ठी, साहित्यिक परिचर्चा की परंपरा रही है। विगत एक दशक से कार्यशालाओं, नाट्य प्रस्तुतियों के साथ साहित्य-वार्ता जैसे बहुआयामी शैक्षणिक गतिविधियों का शृंखलाबद्ध आयोजन किए जा रहे हैं। विद्यार्थियों में लोक तथा शिष्ट साहित्य को आधुनिक दृष्टि से परखने की योग्यता विकसित करना, भूमंडलीकरण के दौर में अपना स्थान निर्धारित करते हुए लोक का विश्व से और विश्व का लोक से अंतःसंबंध स्थापित करना अध्ययन और अध्यापन का उद्देश्य है। हिन्दी विभाग का लक्ष्य ऐसे शोध कार्य करने-कराने का है जिससे समाज को मूल्यपरक दिशा प्राप्त हो सके। हिन्दी विभाग छात्रों को साहित्य के रचनात्मक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि शिक्षण कार्य, स्वयं सेवी संगठनों, प्रेस और रंगमंच से भी जोड़ता है। हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ कथाकार देवेंद्र के मार्गदर्शन में साहित्य को बढ़ावा देने के लिए 'स्वनिम' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

## अयोध्या शोध संस्थान का परिचय

संस्कृति विभाग, उ.प्र. शासन द्वारा अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में अयोध्या स्थित ऐतिहासिक तुलसी स्मारक भवन में 18 अगस्त, 1986 को की गयी जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ देश-विदेश की विभिन्न संस्कृतियों के साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक आदान-प्रदान के कार्य थे। ऐसी मान्यता है कि अयोध्या नगरी की पावन भूमि पर सरयू नदी के तट पर स्थित रामघाट के निकट इसी स्थल पर संवत् 1631 में रामचरितमानस की रचना प्रारम्भ की थी। वर्ष 1969 में लोक निर्माण विभाग, अयोध्या के प्रान्तीय खण्ड ने इस भवन का निर्माण कराया जिसमें 46×14 वर्ग फिट के दो हाल तथा 22 कक्ष निर्मित किये गये। तुलसी स्मारक भवन के संचालन हेतु एक प्रबन्धकारिणी समिति गठित हुई जिसे 18 अगस्त, 1986 को भंग कर इस भवन में अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना हुई और उसकी समस्त परिसम्पत्ति (चल और अचल) अयोध्या शोध संस्थान के नियंत्रण में प्रदान कर दी गयी। तब से इस भवन में शोध सम्बन्धी गतिविधियां प्रारम्भ हुई।

## आवास एवं आवागमन व्यवस्था

अरपा नदी के किनारे बसा बिलासपुर शहर छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक शहर है। यहाँ पर शहर के बीच दो रेलवे स्टेशन बिलासपुर जंक्शन और उसलापुर जंक्शन स्थित हैं, जहां से देशभर में आने-जाने के लिए ट्रेन की उपलब्धता बनी रहती है। शहर से 10 किलोमीटर की दूरी पर बिलासा देवी केंवटीन विमानतल, चकरभाठा में स्थित है। इसी के साथ रायपुर में विवेकानंद विमान तल, माना में स्थित है। रेलवे स्टेशन से विश्वविद्यालय तक आने के लिए प्रीपेड टेक्सी और अन्य साधन हमेशा उपलब्ध रहते हैं।

पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए संगोष्ठी के दिन जलपान व भोजन की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। यात्रा भत्ता और आवास भत्ता की व्यवस्था प्रतिभागियों को स्वयं करनी होगी।

## पंजीकरण हेतु संपर्क


| | |
|---|---|
| डॉ. गौरी त्रिपाठी | : (9452206059) |
| डॉ. रमेश कुमार गोहे | : (7999260291) |
| श्री मुरली मनोहर सिह | : (8319781773) |
| डॉ. राजेश मिश्रा | : (9407691792) |
| डॉ. अखिलेश गुप्ता | : (8085913848) |
| डॉ. लोकेश कुमार | : (6266074475) |
| डॉ. अनीश कुमार | : (9198955188) |
| डॉ. अतुल कुमार | : (9683989791) |